कल्पना पॉकेट सिरीज-१

भवानीशंकर व्यास 'विनोद'

कल्पना प्रकाशन, बीकानेर

मूल्य १.२५

अनुक्रम

इतनी कोमल है त्वचा, और चिकनाई जब उस पर छावे
मक्खी जो टाट मध्य बैठे तो फिसल नाक पर आ जावे
इनकी कोमलता के आगे नारी के अंग लजाते हैं
सुन्दरता में इनके आगे, फूलों के रंग लजाते हैं
तुम हाथ फेर दो सिर पर तो मानो मखमल पर फेर रहे।
मालिश जो करना शुरू करो, जानो फूलों से खेल रहे॥
श्रीमान् गजधर के सिर पर यदि कभी मेह बून्दें गिरती।
बल्ला इक मधुर रागिनी फिर आठों स्वर में फूटी पड़ती॥

हर एक बून्द धारा बनती आगे पीछे दाएं-बाएं।
हर तरफ दाम बहती बून्दें जैसे छाते की धाराएं॥
टाट तपे ऐसे ज्यों राजस्थानी टीला हो।
। हो पनघट का या तू बा एक लचीला हो॥
है खतरनाक गंजों की नानी मर जाती।
[illegible]

कुछ टोपी मे, कुछ साफे मे, कुछ दफ्तर मे छिप जाती है।
गर्मी आते ही टाटो की प्यारी बहार फिर आती है॥
फिर साइन-बोर्ड चमकते है फिर चमके तेज गज-भानु।
गंजापन यानी पेटनैस ... ॥

० ३ ०

जयपुर अजमेर रोड चलती कितनो के बीचो बीच यहां।
कितनों के ठीक बीच मे ही गोले मे चन्दा चमक रहा॥
कितनों के आगे सफाचट्ट, फुटपाथ चले दाए बाए।
कितनो के गंजे सिर पर भी दो चार बाल लहरा जाए॥
कितनो के बालो के नीचे से गंज झांकती है ऐसे।
बुर्के वाली का जाली मे मुख-मंडल झलक रहा जैसे॥
इन्कार कौन कर सकता है गंजेपन की मनुहारो को।
भगवान किन्तु गंजा न करे भारत मे दीन कुंवारो को॥

क्योकि गंजापन इन लोगो की असली उम्र छिपाता है।
पच्चीस वर्ष का युवक इन्हे पैंतालिस का दिखलाता है॥
बालो वाली ये छोकरियां, गंजो से प्यार नही करती।
गंजे पति की जवान पत्नी साजन के साथ नहीं फिरती॥
यदि कभी भूल से निकल जांय तो मन मे लोग विचारेंगे।
पति-पत्नी के स्थान पर उनको बेटी बाप पुकारेंगे॥
फिर क्योंकर बोलो नही गंज की कीमत को मैं पहिचानू ?
गंजापन यानी पेटनैस ॥

जब बड़े बड़े बालों वाले पंजाबी सूबा माग रहे
भारत का अहो-भाग्य समझो गजे नेता ना आय दे
जाने कब तुरन्त बुला बैठें, गजे गजो का सम्मेलन
जाने कब स्थापित करदें एक अखिल भारतीय गजा दल
जाने कब मांग पेश करदें, हम गजा-स्थान बनते
बालो वालों हो सावधान, चुन चुनकर तुम्हें मरवाते'
इनका वश चले तो सब करदें लाचार किन्तु गंजे हैं
कहते हैं गजो को भैया, नाखून भगवान नहीं देता

गजो के नखरे हैं कमाल, गजो के बड़े निराले।
भारत के मन्त्रिमडल मे, पचास फी-सदी गंजे हैं।
दुनिया भर के गजे नेता यू० एन० ओ० मे मिल बैठे
हम जितने जल्दी गजे हो उतना जल्दी गुण पाते।
थी गजाननता-गजपने को प्रियाननता पहिचान,
गंजानन स्वामी प्रेटनैस मैं गजो का सोहा था।

रंग रंग के चश्मों में दुनिया रंगीन दिखाती
ज भर में सारी सृष्टि टैक्नीकलर फिल्म बन जाती।
श्मा पुष्पक है गई निगाहों को आश्वित करता है।
श्मा मूविंग कैमरा है सब दृश्य संकलित करता है।
गोंलों का रक्षा-मन्त्री है, रक्षा का भार उठाता है
ह धूल, धुए से धूप और धक्के से आंख बचाता है।
गाधी दुनिया तो इसीलिए रहती है चश्मे के वश में।
जो रोब सुरक्षित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे में॥

• २ •

जितने भी हैं रणजीतसिंह चश्मे से आंख छिपाते हैं।
जिनके चेहरे पर शिला-लेख वे भी चश्मा अपनाते हैं।
ब्रह्मा ने जिनकी आंखों के एवज ही गल्त खींच डाले
अपनाएं चश्मा सभी डेढ या पौने दो आंखों वाले
गंजों की हल्दी-घाटी की चश्मा ही बनता सीमा है।
इन दन्तहीन वेदन्तों को चश्मे बिन बिकतो बीमा है॥
कमजोर आंख वालों को तो चश्मा ही परम सहारा है
वे 'चश्म शरण गच्छामि' का रोज लगाते नारा है।
... चश्मा उनसे कहता कि "क्लैब्यं मास्मगम: पार्थ।
सर्वे धर्माणि परित्यज: मामेक शरण व्रज:
अफीकन चेहरे वाले काला चश्मा अपनाते हैं।
ऐसा लगे कि ऐनक मे श्री महिषासुरजी आते हैं॥

• ३ •

मुए लोग आठ दिन चश्मे को आंखों पर छाया रखते हैं।
कुछ जब पढ़ते हैं सिर्फ तभी बस इसे लगाया करते हैं॥
क्योंकि जो नहीं लगाए तो जाने क्या से क्या हो जाए।
माता सीता को ये सज्जन फिर माता सिन्हा पढ़ जाए॥
ये पढ़ें भरत को भात और हल्का को पढ़ जाएं हल्वा।
जो लिखा खड़ी पढ़ादें रबड़ी जो लिखा हवा तो पढ़ें दवा॥
इनकी खुराक है बहुत तेज जब भी कुछ पढ़ने लगते है।
दो चार शब्द, दो चार वाक्य चलते २ खा जाते है॥
ये लम्बी सी गर्दन वाले पिचके-पिचके गालों वाले।
कुछ बड़े फ्रेम के चश्मे मे ये घसी-घसी आंखों वाले॥
जो निकल जाय बाहर तो चेहरा कार्टून दिखलाता हैं।
शर्स-बीर्लो को फौरम अपना मैटर मिल जाता है॥
ये शुद्ध सुदामा—ब्राड अगर मोटा सा फ्रेम लगाते हैं।
तो फिर लंका मे रामचन्द्र वाले सैनिक दिखलाते हैं॥
कइयों के काच बहुत मोटे ऐसा चश्मा जो हम पावें।
तो इधर लगाया उधर सभी नैगेटिव फिल्म नजर आवें॥

ये चश्मा तो जादूगर है करता जाता अपने बश मे।
जो रौब सुरक्षित रहे सदा अपने रोबीले चश्मे मे॥

• ४ •

श्री ऐनकदास बिना चश्मे यदि कभी सडक पर आजाए।
उस दिन की सारी घटना से इतिहास एक ही बन जाये॥

वे कभी सड़क के पत्थर को दुर-दुर कह कुत्ता समझेंगे।
तो कभी किसी से टकर उसी को अन्धा कहकर उलझेंगे॥
अपलम् चपलम् से टकर गाल पर चपलम् भी पा सकते हैं।
आ रहा सामने बैल उसी से मिलने भी जा सकते हैं।
हो भरत-मिलाप वहा ऐसा फुट-बॉल आप बन जाएंगे।
जैसे तैसे घर पहुंच जाय चश्मे को तुरन्त लगाएंगे।

चश्मा आंखों पर आते ही ठुड्डी कुछ ऊंची उठ जाती
सीना कुछ आप ही तन जाता छैलों की चाल बदल जाती
यों अकड़ दिखाकर चलते हैं जैसे चिड़ियों में चील चले
या नई बहू की सास चले या जीता हुआ वकील चले
या अकड़ दिखाते ऐसी ज्यों ससुराल जवाई आया हो
या पद्म-विभूषण, पद्म-श्री का खिताब कोई पाया हो
चश्मे में बीजगणित रहती प्लस माइनस के नम्बर सब है
जो रौब सुरक्षित रहे सदा अपने रौबीले चश्मे में॥

*

कुछ कहते जीवन की बाजी ये चमचे नही हार सकते
क्योंकि ये मक्खन–बाजी मे ही बाजी सदा मार सकते।
हमने भी सोचा अच्छा हो अफसर के चमचे बन जाएं।
पर जहां गये पहले से ही तैनात कई कुड़छे पाए॥
जो मोटी कढाइयो के भी अन्तर को हिला सकें ऐसे।
तो चम्मच–ब्रांड हुजूरी की हो सके वहा गिनती कैसे?

० २ ०

चमचों की नीयत साफ किन्तु प्रायः यह बात सटीक रहे।
अफसर से ज्यादा अफसर की बीबी के ये नजदीक रहे॥
यह बात मार्के की मानो चमचे ऐसा क्यों करते हैं?
कारण नब्बे फीसदी बड़े अफसर बीबी से डरते हैं॥
चमचे ये बात खूब जाने जो स्वयं सिद्ध ही कहलावे।
बीबी के मालिश करने से साहब के मालिश हो जावे॥
चमचों का पद गौरवशाली विरले ही गरिमा तक पहुंचे।
बाकी तो बनते रहते हैं मोटे चमचों के ही चमचे॥
जो जीवन सफल बनाना हो मोटे चमचे को गुरु करो।
यानी चमचे के चमचे के चमचे के पद से शुरू करो॥
चमचापन उन्हे मुबारक हो जो अपनी धुन में सच्चे हैं।
तुम जिनके चमचे हो भाई वे भी औरो के चमचे हैं॥

० ३ ०

जो चमचा बनना चाहो तो ये नुस्खा प्रामणिक मानो।
लो एक भाग इच्छा-शक्ति, बेशर्मी चार भाग डालो॥

उससे दुगुनी हाजी-हाजी, चौगुनी चापलूसी लाओ ।
सब खोट खरल कर कपड-छान करके जो पुडिया बनवाओ ॥
तिकड़मबाजी की शहद मिला यह दवा अगर ले पाओगे ।
तब कुछ ही दिन मे आप एक मोटे चमचे बन जाओगे ॥
अफसर चमचो को चाहते है, चमचे ही उन्हे पुजाते हैं ।
ये दोनो बने सिद्ध-साधक, खाते हैं और खिलाते हैं ॥
रिश्वत देना हो तुम्हे अगर, डाइरेक्ट नहीं ली जायेगी ।
देहली जाने वाली गाडी रेवाडी होकर आयेगी ॥
कलियुग की ललित कुण्डली में इन चमचो के दिन अच्छे हैं ।
ये चमचा-युग है, इसमे तो केवल चमचे ही सच्चे हैं ॥

✲

इसलिए तोंद को नमस्कार

भारत मे तोंदल बहुत मिले, ये बड़े सेठ ये साहूकार।
ये मैनेजर, ये डायरेक्टर राजा महाराजा, जमींदार॥
ये बड़े पुलिस के ऑफिसर, नेता-मत्री भी बेशुमार।
इनमे ज्यादातर तोंदल हैं, इसलिए तोंद को नमस्कार॥
इसलिए तोंद को नमस्कार॥

० १ ०

जो देश तोंद वालों का है, सर्वत्र वहां पर आनन्द है॥
हर तोंदवान कह सकता है कि वह साक्षात गजानंद है।
इनका है मोटा पेट दात कोई भी हो पच जाती है।
पर खतरा यही कि कभी-कभी बुद्धि मोटी हो जाती है।
दिखने मे भारी भरकम हैं पर वजन आपका हल्का-सा॥
बस सिर्फ एक क्विटल यानी सौ किलो या थोड़ा ज्यादा॥
इनका है मोटा पेट सब जगह इनको इज्जत मिलती है।
ढाबों मे मुश्किल से ही इन्हे इजाजत मिलती है॥
र मे दो चार फुल्कियो से ही काम चलाते हैं।
निमन्त्रण मिल जाए आखिर माफी मगवाते हैं॥

ये मोदकप्रिय हैं इन्हें मिठाई मिले आए तो बेकार है ।
ये इनका मोटा पेट मिठाई का तो स्टॉक रजिस्टर है ॥
मुझको तो जब ये मिलते हैं, मैं करूं दूर से नमस्कार ।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ॥

• २ •

कुछ तोंदें होती शरमीली नीचे को ढलकी जाती हैं ।
कुछ किन्तु आधुनिक नारी सी जो तनी हुई दिखलाती हैं ॥
कुछ एक तरफ को यों झुकी हुई ज्यों मधुमक्खी का छाता हो ।
कुछ चौड़ाई में हैं कमाल तरबूजा भी शरमाता हो ॥
गोलाई में है तूबे सी फूली है किसी मटकिया सी ।
नीचे को कहीं-कहीं झूली ज्यों मूंज पुरानी खटिया सी ॥
कोमलता में है ब्लैडर सी पंडित की हो या मुल्ले की ।
तुम इसे दबाओ, फूल जाय होती स्पंज रसगुल्ले सी ॥
श्री तोंदनाथजी सोए हों और नजर तोंद पर अटकाए ।
तो गोल गोल ये पेट इन्हें दुनिया का ग्लोब नजर आए ॥
तकिये के बल पर बैठे हों और पत्र कभी लिखना चाहें ।
तो तोंद डेस्क का काम करे कितनी आसानी हो जावे ॥
यह तो बस एक नमूना है जो कई तोंद के चमत्कार ।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ॥

• ३ •

बनियान नाप दरजी से हो टेलर के नाप निराले हैं ।
कारण कि इन्हें बनावें तो मुश्किल से ही मिल पाते हैं ॥

मिल भी जाएं तो फंस जाएं और रहे तोंद के ऊपर ही ।
उभरे सीने पर यों लगता जैसे हो चोली औरत की ॥
या तो कमनीय औरतें हों दो कदम चले थक जाती हैं ।
या फिर मासूम तोंद वालों को भी थकान आ जाती है ॥
आ जाय पसीना हांफ जाय, पुट गुड़ जाय जब आप चले ।
फिर बैठ जांय, फिर हवा करें, क्या खूब नजाकत के पुतले ॥
पानी जो डटकर पिया हुआ और चलने की नौबत आती ।
तो ढकलक-ढकलक हो जैसे अधजल गगरी छलकत जाती ॥
ये गोलाकार तन विस्तारम् उदर भारयं हैं अपार ।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ॥

० ४ ०

जब दरवाजों में घुसें आप तिरछे हो अन्दर आते हैं ।
अपनी खटिया को खाती से स्पेशल ही बनवाते हैं ॥
सोए रहते हैं आप नाक से बाजा बजता जाता है ।
और पेट धोकनी के समान उठता और दबता जाता है ॥
जब कभी बदल लेते करवट खटिया की बीमा बिक जाती ।
चरमर-चरमर चूं चरमरर कुछ ऐसा करने लग जाती ॥
जब कभी दौड़ने लग जाएं तो भारी तन से यों भागे ।
ज्यों भैंस भिड़क कर भाग रही मोटर या लोरी के आगे ॥
पर मुझको तो उस समय तोंद की थिरकन लगती है प्यारी ।
समय तोंद के नर्तन पर मेरी ये कविता बलिहारी ॥
यदि या सस्ती कुर्सी पर जो आप अचानक बैठ जाय ।

अच्छा हो उसी समय कोई फोटोग्राफर भी पहुंच जाय ।।
तो पोज अनोखा मिल जाए कुर्सी में अटके उदर-भार ।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ।।

० ५ ०

श्री तोंदनाथ जी सोए हो तो बच्चे घिर कर आते हैं ।
और उचक-उचक कर तोंदस्थल पर चढ़ सवार हो जाते हैं ।।
फिर कभी गुदगुदी करते हैं चढ़ते हैं उतरते हैं ।
नाभी में अंगुली डाल घड़ी में जैसे चाबी भरते हैं ।।
हर तोंद सुहानी होती है, हर तोंद लुभानी होती है ।
उतनी ज्यादा आकर्षण जितनी अधिक पुरानी होती है ।।
यह तोंद राष्ट्र की सम्पत्ति या कि धरोहर और अमानत है ।
जो इसे सम्हाले नहीं तो फिर हर तोंदवान पर लानत है ।।
इसलिए राष्ट्र का काम समझ लतरों से इसे बचाते हैं ।
सर्दी में ये मद्रास और गर्मी में शिमला जाते हैं ।।
पहाड़ों की हवा खिलाते हैं यहां पर इसे सजाते हैं ।
यों पाल-पोस कर तोंदों को बेचारे बड़ी फुलाते हैं ।।
देने लग जाए राष्ट्रपति यदि पदवी एक तोंद-भूषण ।
तो फुला फुला कर तोंद बढ़ाए ये भारत का दावपेंच ।।
उस समय अगर ये मिलें कहूं मैं और दूर से नमस्कार ।
इनके आगे दुनिया झुकती इसलिए तोंद को नमस्कार ।।

❀

चोटी, दाढ़ी मूंछें

जब चोटी में कुछ चमक नहीं अजी दाढ़ी में भी दमक नहीं, नई मूछों में बल पड़े नहीं तो चोटी, मूंछें दाढ़ी रखना बिल्कुल ही बेकार यहां

० १ ०

आगया जमाना फैशन का अंग्रेजी बालों वालों का।
कैंची का सेफ्टी-रेजर का, नाई के कई कमालों का॥
अजी क्रीम-पाउडर मालिस का कितनी रोमैंटिक बातों का।
नित नए सुनहले दिवस और नित नई सुहानी रातों का॥
अब भी तुम चोटी बढ़ा रहे, गुथवाते हो जड़वाते हो।
या सिर पर गांठ लगा रखते अथवा नीचे लटकाते हो॥
कंघों की भेंट चढ़ाते हो, रोजाना तेल पिलाते हो।
उलझी चोटी सुलझाने में अपना इतवार बिताते हो॥
ऐसी क्या बड़ी अप्सरा है जो सिर पर इसे चढ़ा रखते।
क्या रंभा और मेनका है जो बैठे मस्तक के तख्ते॥
घरवाली कोमल अंगी तो छाती तक ही रह जाती है।
[illegible] ो भोंडी चोटी, सिर ऊपर ठाठ जमाती है॥

मूछ सार नहीं, बेकार महज चोटी का सिर पर भार यहां ।
चोटी, दाढ़ी, मूछे रखना अजी बिल्कुल ही बेकार यहां ।।

• २ •

चोटी को बेशक बढ़वालो सम्मान नहीं होता छोटा ।
पर काम बताओ क्या आए ये डेढ़ हाथ लम्बा चोटा ?
लोगों की दाढ़ी, मूछों को अपनी चोटी से नापोगे ।
या चोटी-पथ चला करके चोटी की राग अलापोगे ।।
या लम्बी चोटी रख करके नारी से होड लगाओगे ।
या चोटी कोम्पीटीशन में ट्राफियां जीत कर लाओगे ।।
क्या रखा है इस चोटी में दे दो पुजारियों पंडों को ।
साधू सन्तों या भक्तों को मन्दिर वाले मुस्टन्डों को ।।
जो सूट बूट धारी सज्जन लम्बी चोटी लटकाता है ।
तो चलता फिरता एक म्यूजियम लोगों को दिखलाता है ।।
अब तो चोटी को औरत भी आगे बढ़कर के कटा रही ।
भारी गुच्छों की जगह सुनो इंगलिश बालों को पटा रही ।।
ये स्वेडिश-कट, ये जर्मन-कट, ये घुंघराले ये नखराले ।
इनके आगे क्या लग पाए चोटी के गुन्थे हुए जाले ?
चोटी रखकर के तो औरत, सीधी-साधी दिखलाती है ।
पर इंगलिश बाल कटाते ही नारी तितली बन जाती है ।।
बेबी, बब्बू, डेडी, मम्मी से चोटी का आसार गया ।
चोटी दाढ़ी मूछे रखना तो बिल्कुल ही बेकार यहां ।।

॰ ३ ॰

मेरे यो ददियल श्रानूमी दाढ़ी का राज बताओ तो।
क्या लाभ ग्रापको पहुंचाती महाराज जरा समझाओ तो॥
जब दूध गटागट पीते हो आधा दाढ़ी पी जाती है।
जो पान चबाओ तो दाढ़ी कथ्थे से मांग सजाती है॥
यों तो रसवन्ती ये दाढ़ी, मीठी मधुरी बनती बाली।
फूलों को छोड़ मक्खियां भी दाढ़ी की ओर भगी आती॥
ईश्वर तो चेहरा देता है चेहरा जन-जन में बांट दिया।
पर ग्राप नाक को छोड़ ग्रापने तो दाढ़ी से पाट दिया॥
अब क्या जानो महाराज ग्राप ये ओठ रसीले क्या होते?
ठुड्डिया नुकीली क्या होती और गाल लचीले क्या होते?
बीड़ी, सिगरेट को सुलगाते कुछ सावधान रहना भाई।
जाने कब भभक से जल जाए, दाढ़ी की यह सुन्दरताई॥
चोटी बालो से खतरनाक है, दाढ़ी का परिवार यहां।
चोटी दाढ़ी मूछें रखना, अजी बिल्कुल ही बेकार यहां॥

॰ ४ ॰

छोड़ा काशी के पण्डित ने मक्का के छोड़ा काबो ने।
मियां, मुल्ला, मौलवियों ने लखनऊ के कई नवाबों ने॥
कवियों ने और किसानों ने छोड़ा दाढ़ी को ददियल ने।
सोधो ने छोड़ा सो छोड़ा कटवाया मिस्टर अड़ियल ने॥
हमको दाढ़ी बर्दाश्त नहीं दो चार बाल काटो मुंह पर।
दाढ़ी का हैड मास्टर है, सेफ्टी-रेजर॥

दाढ़ी के साथ रखें प्यार मेहर को स्वीकार करो अब ।
जो देखो स्नेह ज़माना हो भारत वासी अपनाओ तुम ॥
यों काट छूट कर दाढ़ी को गुड़ गुड़े गाल बनवाओ तुम ।
है कोमल गाल हमारे को नारी से होड़ मनाओ तुम ॥
या तो दाढ़ी हो श्वेत-शुभ्र जैसे रवीन्द्र ठाकुर वाली ।
या फिर हो सफाचट्ट दाढ़ी नहीं पायो भी मस्तानी ॥
तलवार-नुमा या हल-नुमा केवल ठुड्डी पर बाल नुमा ।
बकरे सी लटक रही नीचे, या गालों पर जजाल नुमा ॥
आधी काली, आधी सफेद ऐसी दाढ़ी म सार कहा ?
छोटी दाढ़ी मूछे रखना मर्जी बिल्कुल हो बेकार यहा ॥

० ५ ०

बिल्ली, चूहों के भी मूछे सुनलो मूछों वाले भाई ।
अब क्या मूछों मे अकड रही, जब मूछे पशुओं ने पाई ॥
फिर भी तुम गर्वित होकर के प्राचीन लीक को पीट रहे ।
मर गई मूछ की शान आज मूछों की लाश घसीट रहे ॥
मूछों का एक बाल पहले लाखों की हुण्डी बनता था ।
वह क्रेडिट और भरोसा था ऐसा मूछों डका था ॥
अब चाहे सारी ही उखाड मूछे नीलाम कराओ तुम ।
फूटी कौडी भी मिल जाए तो सीताराम मनाओ तुम ॥
देखो मैं तो मुछमुडा हू पर मूछ किराये पर आती ।
मुझ को मूछें चिपकाने मे फिर देर कहा लगने पाती ?
जो आज सवेरे मुछमुडा वह आज शाम मूछों वाला ।
हर माल किराये पर मिलता ऐसा मूछों का दीवाला ॥

चाय

था गया जमाना बीड़ी का सिगरेट के मधुरिम गानों का
जर्दे का भंग-भवानी का जो सदा सुरंग पाना था ।।
अब दूध, दही, मक्खन मिश्री की बातें सदी पुरानी है ।
जो चाय डबल रोटी बिस्किट फैशन की बात सुनाती है ।।

• १ •

'उठो जागो मेरे प्राणनाथ उठो जागो मेरे जीवन धन ।
पक्षी जागे, गायें बोली ग्वाला आया लेकर दनन ।।
पर क्या मजाल हम जाग जायँ गृहलक्ष्मी जब तक आती है ।
वह आखिर लाती चाय चाय को प्याली हम अलसाती है ।।
मैं इसे चाय का युग कहता वह अपनी जीवन घूँटी है ।
हर घर में रोज चाय पीना ना पदाधिकार ड्यूटी है ।।
तुम शासक-दल या कांग्रेस के हो सदस्य मेरे मित्रवर ।
हैं सभी पार्टियाँ छोड़ सिर्फ हूँ चाय पार्टी का मेम्बर ।
तुम चाहे बनो मिनिस्टर पर मिलती गाली और दुत्कारें ।
मुझको मिलती है चाय, दूध मेवे बिस्कुट्स मिले हार ।।
पी चायामृत का पान हमेशा हम कर मानवी करेंट हर ।
अधर मधुर, जिह्वा मधुर, मधुराधिपते रसिक मधुर ।।

जब तक जीओ तब तक पीओ फिर आनी है ना जानी है।
जी चाय डबल रोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

० २ ०

मेरे दादाजी भक्त बड़े जप करते थे गायत्री का।
हम सदा सवेरे भक्ति - पूर्वक ध्यान धरें चायत्री का ॥
वे राम नाम रस पीते थे, हम चाय नाम रस पीते हैं।
वे प्रभु-विनती पर जीते थे, हम लिप्टन टी पर जीते हैं ॥
टी-गर्ल, आउ या लाओजी, बिस्तर पर बैठे पाओजी।
तो 'त्वमेव माता पिता त्वमेव', कह कर चाय चढाओजी ॥
फिर देखो नींद नदारद है, रफ्फूचक्कर होती थकान।
सिर-दर्द, उदासी, मायूसी, आगे से करती है सलाम ॥
ये है जुकाम मे एनासिन जी मचले तो अमृतधारा।
यह च्यवनप्राश, यह ब्रह्म-वटी रस, भस्म, रसायन है सारा ॥
नारद कहते नारायण से देवों मे चाय चलानी है।
जी चाय डबल रोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

० ३ ०

जब चाय केतली-नृत्य करे कत्थक नर्तन शर्माता है।
सगीत छेडता जब स्टोव पायल का स्वर दब जाता है ॥
यो गीत और सगीत भरी ओठो तक आती है हसती।
होता है पाणिग्रहण बढाती अधरो की मादक मस्ती ॥
मेरी सरकार गर्म होती, पर मीठी लगती है कमाल।
ज्यो कभी क्रोध मे नारी के हो जाय गुलाबी रग गाल ॥

जब चाय चली तो दूध मली चली का लेकर हाथ चली ।
शरीर का सर [illegible] चली दूनी [illegible] को साथ चली ॥
लेकिन, जिसकी कहते माता [illegible] साथ को भी कम है ।
इन सई चाय [illegible] [illegible] [illegible] से बड़ा कम है ॥

• ० •

यदि कभी अचानक मेहमानों का टोला आ धूम धिर आओ ।
और अपनी शान बचानी हो तो इस नुस्खे को अपनाओ ॥
लो एक चाय भर दूध चाय म एक सेर पानी डालो ।
हो काली मिर्च जरा ज्यादा, शक्कर का बजट घटा डालो ॥
पहली चुस्की म साथ गले म जलन सनसनी आएगी ।
अन्तिम चुस्की तक पाओ म जूतों गुद ही चढ़ जाएगी ॥
यो भाग चलेंगे भागेंगे ज्यों पतंग चले कट जाने पर ।
जैसे मच्छर भग जाते हैं डी डी टी के छिड़काने पर ॥
मैं सिगरेट चाय डबल रोटी डालमिया बिस्किट जो पाऊं ।
तो "अष्ट सिद्धि नवो निधि को सुख" बड़े ठाठ से ठुकराऊं ॥
यह काली चाय फकीरा की चढ़ता है दूजा रंग नहीं ।
इसकी तुलना में चरस और तम्बाकू, गांजा, भंग नहीं ॥
मैं कब तक कहता रहूं चाय की लम्बी एक कहानी है ।
जो चाय डबल रोटी बिस्किट फैशन की बात सुनानी है ॥

रसवन्ती

-()-

वैसे ही जीवन नीरस है क्यों अधिक उसे बेकार करें ?
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेड़ा पार करें ॥

• १ •

ऐ साकी इन दिलवालों को कुछ दिल का दवा दिला देना ।
जब मीठा मीठा दर्द उठे हल्का सा जाम पिला देना ॥
जो कहें शराब शराब बहुत यह लग जाए तो डायन है ।
पर मैं कहता यह फाइन है यह वाइन नहीं डिजाइन है ॥
यह अगूरों की बेटी है लगूर स्वाद कैसे जाने ?
जो बन्दर हैं इस अदरख की कीमत को कैसे पहिचाने ?
कुछ सोचो तो सुरलोक-निवासी देव सुरा पीते आए ।
अपना सुरलोक सुरक्षित है जो हम मदिरा को अपनाए ॥
जो हो गिलास या बोतल मे किम् दत कटाकट कर्तव्यम् ।
पीने वाले मर्तव्यम् तो बेचने वाले भी मर्तव्यम् ॥
विस्की, ब्रैंडी, बीयर तो क्या ठर्रा भी हो स्वीकार करें ।
ो हम मिलकर अपना और भारत का बेड़ा पार करें ॥

• २ •

ससार सुरामय हो जिनको वे पीते और पिलाते हैं।
'मधुशाला' के पीछे ही तो कितने बच्चन बन जाते है ॥
क्योंकि मिलती चल चितवन, पग की थिरकन, दिल की धड़कन
प्याली चुम्बन, मस्ती का मन, ऐमा शराब का अभिनन्दन ॥
चाहे कोई कुछ लिख जाने पीने वालो को फिक्र नहीं।
दिल लखपतियो-सा हो जाता छोटी बातो का जिक्र नही ॥
पीकर हो जाते धुत्त आप जब जाने होश हवाश लगे।
अपने को समझे राष्ट्रपति बाकी सारी बकवास लगे।

बिड़ला बाग़ट मिट्टी लगते, उन बेचारो का क्या विसात।
ससार झूमता आखो मे छोटो मोटो की कौन बात ?
जब आप नशे मे धुत्त रहे उस समय तारा खेली जावे।
इक्के से लेकर राजा तक बेगम ही बेगम दिखलावे ॥
ऐसे लोगों का 'यथा देव पूजा' से ही सत्कार करें।
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेडा पार करें ॥

• ३ •

जिस समय झूम कर चलते हैं, मन का मयूर यों इठलाता।
सड़कों पर बिना टिकट के हो, भारत नाट्यम होता जाता ॥
लड़खड़ा रहे हैं पाव कि ज्यों सर्कस मे रस्से पर चलते।
फिर भी बैलेन्स बराबर है, बढ़ रहे कदम गिरते पड़ते ॥
मुख को आजादी है पूरी धारा चवालिस नहीं वहा।
इसलिए बोलते जाते हैं कोमा या पूर्ण विराम कहां ?

जो करे रुकावट थोड़ी-सी तो कर्म-कपाली कर लेते।
रुस्तम के चाचा आ जाए उसको भी गाली दे देते।
तुम कभी अकड़ना नही सुने जाओ जो भी ये कहते हैं।
दीवानी और फौजदारी इस समय जेब में रहते हैं॥
इस जन्नत देने वाली पर आओ जीवन को वार करें।
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेड़ा पार करें॥

० ४ ०

ये तो मस्ती के मौला हैं, जब जब पीकर के चलते हैं।
अपने को नही हजारों में लाखों में एक समझते हैं।
नुक्कड़ पर जो है लैम्प पोस्ट उससे लिपटें, बोलें वाणी।
लेकर चिराग तुम खड़ी रही कितनी अच्छी मेरी रानी॥
यदि उस नाली के तीर आप काली कुतिया पा जाएंगे।
तो हाथ फेर पुचकारेंगे फिल्मी संगीत सुनायेंगे॥
बोलेंगे कितनी अच्छी हो घर से बाहर मिलने आई।
हर समय ध्यान रखती मेरा ऐ मेरी श्यामा मन भाई॥

कुतिया बेचारी परेशान पर चाट चूम सहला देती।
इस नए प्रेम अभिनेता को पानी सम्भवतः पिला देती॥
यों 'लाघव नयनम् नाली शयनम्' मस्ती को साकार करें।
आओ हम मिलकर अपना और भारत का बेड़ा पार करें॥

• २ •

जब तक रिश्वत का मार्ग बन्द जो हल्ला गुल मचाते हैं।
वो हरिश्चन्द्र या धर्मराज की टू-कापी दिखते हैं॥
उनको भी रिश्वत दिए जाएं तो मन्त्रमुग्ध हो जाएंगे।
कई विश्वामित्र मेनका के चक्कर में पड़ ही जाएंगे॥
बस ज्योंही मुट्ठी गर्म हुई, मैटर के मैटर बदल गए।
अन्दर की मालुम जो भी हो, ऊपर के रैपर बदल गए॥
घर बैठे बड़े अफसरों को जो तुलसी-दल पहुंचाते हैं।
तो सालिग्राम मस्त रहते बिल्कुल कर मौज उड़ाते हैं।
रिश्वत के ढंग अनेकों हैं, झुकना या तनना पड़ता है
रिश्वत पाने के लिए किसी का चमचा बनना पड़ता है।
हो रहा नियम से काम मगर उसको अटकाना पड़ता है
सब बातों की है एक बात कुछ तो मटकाना पड़ता है

• ३ •

वैसे भी तो ये कलियुग है इसकी भी हैं मर्यादाएं
खाने पीने तक की इसमें अब बदल गईं परिभाषाएँ॥
अब खाने का मतलब रिश्वत, पीने का मतलब है शराब।
ईमानदार को पीछे से अब लोग, गधा कहते जनाब॥
अब आप गधा बनना चाहो, तो कोई क्या कर सकता है!
मरने वाला मर सकता है, चरने वाला चर सकता है॥
मौका-चरने का आया है, खा पीकर बकरे बन जाओ।
भगि गोपाल जहां पाओ उसे चरते जाओ!

इनकी मर्दानी जर्दे में

ये मर्द बांकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे में।
इनकी मर्दानी जर्दे में ॥

० १ ०

कब्जी की आम शिकायत हो या बदहजमी के हो शिकार।
या वात-पित्त के रोगी हो अथवा आतड़ियों मे विकार ॥
दांतो में कीडा पडा हुआ या हाथ पैर ठडे रहते।
नाड़ी जो ढीली चलती हो अथवा गमगीन बने रहते ॥
मत फिरो डाक्टरों के पीछे, सन्तो ने राह बताई है।
ऊपर के रोगों के खातिर जर्दा पेटेन्ट दवाई है ॥
जर्दा है राम-बाण औषधि रग-रग में घुस्ती जाता है।
जर्दा हकीम वीरूमल सा बुड्ढों में मस्ती लाता है ॥

अजी भूतकाल मे कौन भला इन्जेक्शन लेता देता था।
छोटे मोटे रोगों पर तो रोगी जर्दा खा लेता था ॥
तुम मर्द नहीं बन सकते हो केवल तलवार चलाने से।
मर्दानी का सर्टीफिकेट मिलता है जर्दा खाने से ॥

इनको जर्दा कड़वा लगता खाने वालो को दावत है।
राणाजी को जो जहर लगे मीरांबाई को अमृत है ॥
जर्दे के गुण अस्पष्ट क्योंकि वे छिपे हुए हैं पर्दे मे।
ये मर्द बांकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे मे ॥

• २ •

प्रात: उठकर ये मर्दाने जर्दे को प्रथम चबाते हैं।
दिन के भोजन का उद्घाटन जर्दे के साथ मनाते हैं ॥
बिस्तर पर बैठे-बैठे ही लगने जर्दा हथियाने में।
पाखाने से पहले इनको गौरव है जर्दा खाने मे ॥
जर्दे मे सभी विटामिन, ये एनर्जी फूड कहाता है।
ये शिलाजीत की तरह सुनो मिन्टों में असर दिखाता है ॥
जर्दा जोरू से अच्छा है, हर समय साथ मे रहता है।
पॉकिट मे दिल पर रहता है मुंह में अधरों पर रहता है ॥

यह गोरी है यह केशरिया सौरभ वाला भीना-भीना।
जोरू बिन मर्दों काट सकें जर्दे बिन बहुत कठिन जीना ॥
पत्नी से ज्यादा सहनशील जब चाहो रौंदो, पुचकारो।
इच्छा माफिक मसलो, कुचलो, फटकार हथेली पर मारो ॥
पर क्या मजाल उफ करदे वो, जीवन साता दिल मुर्दों मे।
ये मर्द बांकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे मे ॥

• ३ •

जब केशरिया जर्दा मक्खन चूने का साथ निभाता है।
जब पूछो खाने से पहिले मुंह मे पानी भर आता है ॥

पहले मारू बाजा बजता तब कहीं जोश तन में आता।
दो पैसे का मक्खन जर्दा उससे ज्यादा हिम्मत लाता॥
जो कहते जर्दा बन्द करो आखिर वे ही पछताते हैं।
भारत मे दुब्बे से लेकर छब्बे तक जर्दा खाते हैं॥
ओठों के पॉकिट मे ज्यों ही जर्दे का पैकिट जाता है।
उस समय अधर का यह ढाचा अभला ब्रेकिट बन जाता है॥

जर्दे का रस फिल्टर होकर ओठों के आगे बढ़ता है।
जर्दे का रग निरन्तर ही अपने दांतो को रगता है॥
अपनी दांतो को रगता है चेहरे पर जर्द चढ़ा देता।
पीला चेहरा, पीला मुखड़ा, पीला ही मर्द बना देता॥
पीलापन मानी गोरापन जो गोरा बनना चाहो तुम।
तो प्रेमपूर्वक श्रद्धा से इस जर्दे को अपनाओ तुम॥

० ४ ०

वैसे वेदों मे लिखा हुआ भिक्षा से दूर सदा भागो।
पर संतों की परमीशन है जिससे चाहो जर्दा मांगो॥
जब चाहो हाथ पसार कहो बाबूजी कुछ जर्दा देना।
मिल जाये तो इस्सा-अल्ला वरना चुपके से सह लेना॥
आखिर जर्दा ही मागा है, जेवर का चाहा दान नहीं।
इन्सल्ट-प्रूफ जर्दे वाले इनका होता अपमान नहीं॥
कुछ सदा माग कर खाएगे चाहे जितनी ।
वैसे खरीदने की डोल्स गगा के तट पर

ं का जोड़ा शानदार सुन्दरता को सरसाता है।
का जर्दे का पान यहाँ बस इन्द्र-धनुष दिखलाता है॥
है पान हरा, जर्दा पीला, सुर्ती काली, चूना सफेद।
के भी माली मिल जाये तो इन्द्र-धनुष में कौन भेद?
को बनाए हुए जर्दा क्यों रहते गोरख-धन्धे में?
है ये बांकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे में॥

*

पहले मारू बाजा बजता तब कहीं जोश तन में आता।
दो पैसे का मघगन जर्दा उससे ज्यादा हिम्मत लाता॥
जो कहते जर्दा बन्द करो आखिर वे ही पछताते हैं।
भारत में बुड्ढे से लेकर बच्चे तक जर्दा खाते हैं॥
ओठों के पॉकिट में ज्यों ही जर्दे का पैकिट जाता है।
उस समय अधर का यह ढांचा मखमली पॉकिट बन जाता है॥

जर्दे का रस फिल्टर होकर ओठों के आगे बढ़ता है।
जर्दे का रंग निरन्तर ही अपने दांतों को रंगता है॥
अपनी आंतों को रंगता है चेहरे पर जर्द चढ़ा देता।
पीला चेहरा, पीला मुखड़ा, पीला ही मद बना देता॥
पीलापन यानी गोरापन जो गोरा बनना चाहो तुम।
तो प्रेमपूर्वक श्रद्धा से इस जर्दे को अपनाओ तुम॥

• ४ •

वैसे वेदों में लिखा हुआ भिक्षा से दूर सदा भागो।
पर संतों को परमीशन है जिससे चाहो जर्दा मांगो॥
जब चाहो हाथ पसार कहो बाबूजी कुछ द देना।
मिल जाये तो इंशा-अल्ला वरना चुपके ॥
आखिर जर्दा ही मांगा है, जेवर का ो।
इन्सल्ट-प्रूफ जर्दे वाले इनका होता
कुछ सदा माग कर खाएंगे
जैसे खरीदने की सौगन्ध गंगा

र्दे का बीड़ा शानदार सुन्दरता को सरसाता है ।
रि का जर्दे का पान यहां बस इन्द्र-धनुष दिखलाता है ॥
है पान हरा, जर्दा पीला, सुर्ती काली, चूना सफेद ।
त्थे की लाली मिल जाये तो इन्द्र-धनुष मे कौन भेद ?
को धरनाएं हम जर्दा क्यो रहते गोरख-धन्धे में ?
ये मर्द बांकुरे मतवाले इनकी मर्दानी जर्दे मे ॥

*

[illegible] है [illegible] है।
और तुम [illegible] है ॥

• - •

जब बेंचिंग के [illegible] पर तुम [illegible] पाया।
तो प्रात हुआ तो मतवाला खटिया में खटमल आया।
गद्दी, तकिया, चुन्नट, पेन्ट सब [illegible] आप [illegible] करे।
तुमि भारी भारत को है, बेखटक आप करें विचरें ॥
हैं खटमल खाली खाटों पर [illegible] से जाता है [illegible]।
दिल्ली के सभी पर जैन हो [illegible] हुआ कोई खतरा ॥
जब कुछ मुझसे भी ध्यान करे यह अनुभव मौलिक होता है।
सारा परिवार सुझाए तो जब यह दृश्य अलौकिक होता है ॥
कोई पसली खुजलाय रहा कोई बगलें सहलाय रहा।
समझें चाहे मरल चाहे कोई—कोई शर्माय रहा ॥
ये बदनसीब खटमल जाने कब कहाँ कहाँ घुस जाते हैं ?
जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं ॥

० ३ ०

यों कई धाराकर, बिक्रीकर, मृत्यु कर तक लग जाते हैं।
पर मगर या खटमल जी तो सोने पर टैक्स लगाते हैं ॥
वे स्वर्ण-नियन्त्रण करते हैं ये शयन–नियन्त्रण करते हैं।
वे कामराज से डरते हैं ये काम रात को करते हैं ॥
ये खटमल हैं या नटखटमल ये जिनके पीछे पड़ जाते।
तो फिर छुड़ाना मुश्किल बीमा के एजेन्ट नजर आते ॥
जिस खटिया में खटमल रहते पहले से कोई बतलाए।
तो तीसमारखाँ भी उस पर सोने से सचमुच कतराए ॥

तुम चाहे स्वयं सिकन्दर हो लेकिन चपेट में आ जाओ।
तो बस राधे-गोविन्द भजो बैठे खुजलाते ही जाओ॥
नारद जी अपने अनुभव कुछ कमलापति को समझाते हैं।
जो लोग भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं॥

• ४ •

अपनी सीमा में सजग रहे होटल सराय इनका मुकाम
ये नाइट ड्यूटी करते हैं, आराम लगे इनको हराम।
हैं पूर्ण धर्म-निरपेक्ष आप, फिर जाति-पाँति की क्या लगाम?
हर मुस्लिम से अल्ला-अल्ला, हर हिन्दू से हैं राम-राम।

खटमल की किस्में हैं अनेक है भिन्न-भिन्न जिनकी खुराक
रातों के खटमल से ज्यादा दिन के खटमल हैं खतरनाक।
बहियों के खटमल अमर-बेल ज्यों खुद ही पलते रहते हैं
जो एक बार लग जाये तो पीढ़ी तक चलते रहते हैं।

झगड़े की खाटों पर बैठे कितने ही कानूनी खटमल
अनपढ़ से डिग्री मे ऊंचे कितने डिग्रीधारी खटमल।
कुछ खटमल "मे आई हेल्प" कहे, पर वैसे तने हुए रहते
कुछ "सेवक" खटमल जनता के मालिक ही बने हुए रहते।
राशन के खटमल शासन मे सच्चा आनन्द मनाते हैं
रण के खटमल जाने क्यों मोटे ही होते जाते हैं॥
-कई गेरुए खटमल जो बैठे-बैठे पा जाते हैं।
. भुक्त भोगी उनको खटमल की कथा सुनाते हैं॥

दल बदलू

• १ •

कल मिले एक दलबदलूजी, हम बोले तुम सिद्धान्त हीन।
दल परिवर्तन करते रहते, नीति-विहीन, आदर्शहीन।।
परसों तक तुम जनसंघी थे कल थे स्वतन्त्र अब कांग्रेसी।
कल सोशलिस्ट हो सकते हो, यह कैसी राजनीति कैसी ?
वे बोले मिथ्यारोपण है, हम दल-परिवर्तन नहीं करें।
हम तो सदैव सत्ता-दल के सत्ता के साथ साथ विचरे।।
दुनिया में एकमात्र कोई अच्छा है तो सत्ता दल है।
बाकी तो सारा कूड़ा है, कचरा है, कोरा दलदल है।
हां सोशलिस्ट या रैडिकल सत्ता का साथ निभाते हैं।
जनसंघी हो या भगी हो, हम दोनों में मिल जाते हैं।।

• २ •

जब दल विशेष की सरकारें गिरने की हालत होती है।
तो प्रजातन्त्र में एक एक मत की भी कीमत होती है।।
सतुलन हमारे हाथों में चरणों में गिरते हैं प्राणी।
खुद मुख्यमंत्री दौड़ दौड़ करते हैं अपनी मग

मोटे मोटे नेताजी भी हमको इस तरह फुलाते हैं।
ज्यों रुठे हुवे जवाई को बेटी के बाप मनाते हैं॥
हम भी अपनी शर्तें रखते और साठ गांठ जो हो जाती।
तो राजस्थान तातरी, रातों रात हमारे खुल जाती॥
हम नहीं जवाई मामूली, छुटपुट मे नही घेरते हैं।
हम तो सरकारी जामाता, लाखो पर हाथ फेरते हैं॥

• ३ •

मानो जनसघ का शासन हो और वह भी अंतिम स्वास गिने।
हम कांग्रेस मे मिल जाए, डूबे पर तीन बास अपने॥
फिर तोड़ा तोड़ चले जब भी, सौदेबाजी का हो मौसम।
ज्यादा रुपयो के साथ, भूलता है अपना भी पैण्डूलम॥
ये प्रिंजनिम बड़ा बुलद रहे, बगले और मोटर कार मिलें।
अपनी दूकान समेटें तो पगड़ी मे कई हजार मिलें॥
शादी तलाक दोनो बातें अपनी गीता मे हैं समान।
इसको छोड़ें उसमे मिलजें, यह ही सर्वोत्तम है विधान॥
हम करें सगाई माया से, पर साथ घूमती है प्रसून।
मिस रेखा से शादी होती, मिस रजनी से हो हनीमून॥
- ो राजनीति ऐसी, चोरो को यही सिखाते हैं।
ाय मिलाते हैं कइयों का हाथ दिखाते हैं॥

• ४ •

भी सतरे में कोई सरकार कहीं पर होती है।
विधायकों पर बड़ी नजर उस समय सभी की होती है॥

नए नुस्खा दो वोटों के [illegible]
उनको देने के लिये जा रही [illegible] ॥
श्री रामनाथ गुड़ पाते हैं [illegible]
कि मात्र वीर वैलेन्स आपका [illegible] ॥
नैतिकता को ही रखना था तो [illegible] ?
अच्छा हो मंदिर में जाकर के वहीं पुजारी बन जाते।
इस युग में भी सिद्धान्तों की [illegible] पकड़ दौड़े जाते।
दुनिया उनको उल्लू समझ के [illegible] मान जाए ॥

० ५ ०

दल की दलदल में क्या रखा कि घर से जागी बन जाओ।
अनुशासन में रहते-रहते, टी० बी० के रोगी बन जाओ ॥
वह सकें नहीं सुन सके नहीं, बस घुटते जाते अन्दर हैं।
ये नेता हैं या पता नहीं कि गांधीजी के बन्दर हैं ॥
दल बदलू सदा तेज रहते, दल वाले फीके फीके हैं।
दल वाले खूँटे की गाएं, दल बदलू साँड सरीखे हैं।
दल वाले सदा पुराने हैं, दल बदलू हैं लेटेस्ट चाज।
दल बदलू अब मुस्टंडे हैं, दल वाले हैं कोरे मरीज ॥
यों कह कर चले ठाठ से जब दलबदलू जी मोटर सवार।
मुँह से यों अनायास निकला गुरुदेव तुम्हें है नमस्कार ॥

परिवार नियोजन

-()-

१

गीता लीला पुन् गुन् राजेश महेश मुरारी हो।
आधुनिक देवकी माय आठवें बच्चे की तैयारी हो॥
तो होने दो बेचारे को यह जीव जगत सब मिथ्या है।
हे अर्जुन चिन्ता रहित रहो जो होता मेरी इच्छा है॥
बच्चो का होना ना होना यह तो नियति की सधि है।
पर यहा तीन के बाद अगर चौथा हो तो पाबंदी है॥
क्योंकि चौथा बच्चा होना भारत में विनाशकारी है।
वह सरप्लस है, बेकार, धरा पर भार, गैरसरकारी है॥
मानवता के विकास मे तो भारत अव्वल ही आता है।
हर तीन क्षणो मे यहा एक बच्चा पैदा हो जाता है॥
यो एक मिनट में बीस और घण्टे मे बारह सौ केवल।
हर साल एक सौ बीस लाख की बढती रहती है टोटल॥
बच्चे संक्रामक रोग कई ये फैले अगर महामारी।
चाट जाय कपडे अनाज नेताई और रोजगारी॥
। शास्त्रों के मथन से हो गर्भ ज्ञान यह प्राप्त हुवा।
लूप-पुराणे नारी-खड़े प्रथमोध्याय समाप्त हुवा॥

२

ऋषी कहते, हे मुनिश्वरो, हम अपना ज्ञान बताते हैं।
जिस जिसने लूप लगाया है हम उनकी कथा सुनाते हैं॥
वैसे तो अब ये कलियुग है बाते बनती ही रहती हैं।
देवियां लूप लगवाती हैं मातायें जनती रहती हैं॥
बढ़िया सी मच्छरदानी ज्यों मच्छर पर रोक लगाती है।
यों लूप लगी बच्चादानी बच्चों से हमें बचाती है॥
ये तो फरमाइश गाना है इच्छानुसार तुम लगवालो।
नकली दांतों की तरह आप जब चाहें पुन निकलवालो॥

मानो ये अर्द्ध-विराम चिन्ह है पूर्ण विराम न हो पावे।
खुल जा सिमसिम तो खुल जाये रुक जा सिमसिम तो रुक जावे॥
हम जरा रेडियो खोलें तो आती उसमे मीठी वाणी।
सब लूप लगान को कहती मनाणी या कि महरानी॥
हे मुनियो, कष्ट-निवारण में सर्वत्र लूप ही व्याप्त हुआ।
अब गर्भ-पुराणे निरोध खण्डे द्वितीयोध्याय समाप्त हुआ॥

३

कुछ बड़े मजे की बातें हैं, क्या कहना एवं विचारों का।
छै-छै बच्चों के साथ लाभ बतलाते लघु परिवारों का॥
कुछ मन में सख्त विरोधी हैं लेकिन सरकारी नौकर हैं।
फिर भी लाते जाते हैं वे, पर कहते बात दावर हैं॥
यों तो यौवन का समय सही का होता खूब बुलन्दी का।
फिर भी उपदेश दिया जाता है दुनिया को नसबन्दी का॥

हम नसबन्दी से सहमत हैं ऐसी ही राय हमारी है
आओ शिखण्डियों आज महाभारत में विजय तुम्हारी है
अब जो भी आगों वाले हैं, बच्चों की पल्टन से डरें।
हां जो धृतराष्ट्र सरीखे हैं, सौ – सौ बच्चे पैदा करें॥
शादी करवाते पण्डित जी शायद ये मन्त्र सुनायेंगे।
दो अथवा तीन बहुत अधिकस्य अधिक मे पछतायेंगे॥
ये मुनियो, ये वैतरणी है जो यहां नहाया शान्त हुआ।
नसबन्द पुराणे प्रयोग खण्डे तृतीयोध्याय समाप्त हुआ॥

४

घर में बच्चों की पल्टन हो कम वेतन मे मंहगाई में।
तो फिर भक्ति का योग बने आसक्ति पड़े खटाई मे॥
ज्यादा बच्चो वाले घर में रुखा भोजन ठंडा पानी।
मोटी माला गोपी-चन्दन लेने को फिर हरि की वाणी॥
जो उनसे कोई कुछ मांगे, तैयार जवाब रहे हरदम।
मंगते से जो मंगता मागे, जय जय रामं जय जय श्याम॥
इस बेकारी मे अगर आप नसबन्दी लूप लगाएंगे।
अवकाश मुफ्त, आराम मुफ्त ऊपर से रुपये पायेंगे॥
थोड़ा सामान तो सुखी सफर थोड़ा परिवार सुखी जीवन।
जो थोड़े बाल रहे सिर पर तो टाट चमकती है चमचम॥
। हो किसी लोमड़ी सी जो पूंछ आपकी कट जाए।
सबको दो उपदेश, पूंछ भारी है भद्दी दिखलाए॥
बहिनों, जिसने कटवाई उसको ही गौरव प्राप्त हुआ।
सतोष पुराणे गृहस्थ खड चतुर्थोध्याय समाप्त हुआ॥

क्वारे हैं युग के देव जिन्हें सौंदर्य चढ़ाया जाता है।
अर्पण जवानियाँ होती हैं, तो इन्हें रिझाया जाता है॥
जो ग्रह से ऊँचे दसवें ग्रह बन, आसमान कहलाते हैं।
जिनका ये हाथ पकड़लें उनके प्राणनाथ बन जाते हैं॥
बाजार भाव इनके ऊँचे हर जगह आपकी महँगाई।
क्वारेपन का मानो कमाल.....................॥

० ३ ०

क्वारों के नखरे हैं कमाल क्वारों की नजरें घातक हैं।
बेशर्म विश्वविद्यालय से कितने ही क्वारे स्नातक हैं॥
यदि कहीं सुन्दरी दिख जाए, लगता है खाँसी का ठसका।
और चचल आँख मचल जाए तो रोग नहीं इनके वश का॥
कुछ फिल्मी राग छेड़ते हैं क्योंकि हर क्वारा तानसेन।
कुछ ठण्डी आह भरे ऐसी सुन सके सुन्दरी येन केन॥
ये तो बचपन की आदत है कि मुंह से सीटी निकल पड़े।
दो शेर मोहब्बत के पढ़ दें क्योंकि ये शायर बहुत बड़े॥
बस उसे नायिका समझेंगे, खुद नायक बन जाए भाई।
क्वारेपन का मानो कमाल क्वारों की जय बोलो भाई॥

० ४ ०

रे जिनकी आंखो मे कज्जल का चलती तीक्ष्ण धार।
आगे बालो को जो लोग संवारे कई बार॥
रगड़ मुंह धोते है जैसे हर रोज स्वयंबर हो।
पहनेंगे बदल-बदल जैसे कपड़ों के नम्बर हों॥

इतिहास नागरिक शास्त्र पढ़ें तो समय गवाना ही माने ।
हर उपन्यास को आप पाठ्य-पुस्तक ही अपनी पहचाने ।।
या पढ़ने कुवांवाड़ा बात कि जब तक क्वारेपन का संबल है।
हर नई फिल्म को देखें ये स्याई टाइम टबल है ।
सब वाद्य-यन्त्र हैं तुच्छ श्रेष्ठ केवल बरात की शहनाई ।
क्वारेपन का मानो कमाल क्वारों की जय बोलो भाई ।।

• ५ •

शादी देरी से होवे तो भरना पड़ता है स्वयं पेट ।
हर क्वारा फिर बन जाता है चूल्हे चक्की का ग्रेजुएट ।।
हो तवे तपेली का का ज्ञाता, बेलन का पाता ब्रह्मज्ञान ।
हो पाक शास्त्र मे पारगत तब मिले रसोई मे स्थान ।।
ऐसे क्वारे से शादी हो तो फिर दुल्हन सुख पाएगी ।
उस पाक शास्त्री दूल्हे से वह पकी पकाई खाएगी ।।
मन चाहे मैके जाएगी क्योंकि रोटी का फिक्र नहीं ।
जाने मे होगी उतावली वापिस आने का जिक्र नहीं ।।
देवी की पूजा करने की वेदों ने भी महिमा गाई ।
क्वारेपन का मानो कमाल क्वारों की जय बोलो भाई ।।

• ६ •

जो भी शादी वाले होते क्वारों को कहते हाफ टिकट ।
और कभी कभी तो क्वारों को सुनने पड़ते ये शब्द विकट ।।
"अजी कौन इसे बेटी देवे लक्षण देखो आवारा है।
या रोगी है या व्यसनी है तब ही-तो देखो क्वारा है" ।

कंवारे कंवारों से प्रेम करें, आपस में ये घुल मिल जाते।
कंवारे नेताओं के फोटू अपने कमरों में चिपकाते॥
श्री कामराज, कृष्णा मेनन, पटनायक, चन्द्रभानु गुप्ता।
श्री बी० सी० राय, प्रद्युम्न सेन ये भारत के कंवारे नेता॥
इनके चित्रों को देख देख संतोषी ये बनते भाई।
क्वारेपन का मानो कमाल क्वारों की जय बोलो भाई॥

• ७ •

इन कुमारियों को भी शादी की चर्चा बहुत सुहाती है।
माँ बाप बात करते हों तो चुपके से कान लगाती है॥
हो जाय सगाई पक्की तो गालों पर लाली छा जाती।
यह शुभ संदेश लिए सखियों में फौरन आप पहुंच जाती॥
फिर हंसी ठिठोली होती हैं खुलकर बातें होती मन की।
रस की फुलझड़ियों सी बातें हैं सखियों के सम्मेलन की॥
कोई कहती है अरी बावरी क्यों उतावली होती है?
कोई कहती है हाय याद में आप सावली होती है॥
कोई कहती यह चाहती है कि कितनी जल्दी जाऊं मैं।
कोई कहती इच्छा इसकी झट कोयल सी उड़ जाऊं मैं॥
कोई कहती यह चाहती है उनकी गोदी में सर हो।
सदा हो मधुरिम बातें हों, मिश्री जैसा मीठा वर हो॥
-क्वारी दोनों मे शादी की रहती अकुलाई।
का मानो कमाल क्वारों की जय बोलो भाई॥

✲

कडके

-()-

कडके वे हैं जो औरो की जेबो का सदा ध्यान रखते।
समाचित खर्चे हि लेकिन अपने को सावधान रखते ॥
जो मीठी-मीठी बातो मे ही स्वार्थ सलामन कर लेते।
उल्टा ही चले उस्तरा पर जो ठीक हजामत कर देते ॥
मित्रो के घर का पैसा हो तो सर्व भूमि गोपाल रहे।
जो अपने घर का पैसा हो आगे से जै गोपाल रहे ॥
इनके चक्कर मे जो जाए हम उनकी व्यथा सुनाते हैं।
इन मुफ्तखोर मित्रो यानी कडको की कथा सुनाते हैं ॥

• २ •

एक रोज बहुत जल्दी तडके आगये हमारे घर कडके।
आवाज जोर से दी, निद्रा से जागे हम घबरा करके ॥
मनहूस दिवस है, यह देवीजी घुसी रसोई मे जाकर।
दरवाजा खोला शनिश्चरो के धन्य हुए दर्शन पाकर ॥
हम बोले है यह अहो-भाग्य, लो चाय नाश्ता आप करो।
मन मे सोचा कमबख्तों तुम चुल्लु पानी मे डूब मरो ॥
वे बोले चाय बहुत अच्छी नमकीन विशेष शुष्क का है।
हमने सोचा क्यों नहीं रहे आखिर तो माल मुफ्त का है।

• ३ •

हम गये चाय की होटल में, काफी भाई मगबार पड़े।
इतने में जाने में कब कैसे कुछ कड़के अपनी ओर बढ़े ॥
'ओहो गुडमोनिंग सर', कह कर जो किया जोर से अभिवादन।
सोचा कि एक रुपये के तो अत-काल का आया क्षण ॥
मन में तो घला मरजिया पर ऊपर से कहा चाय लाओ।
मित्रो के अर्पण समझ उसे सोचा कौओं पीते जाओ ॥
उनकी अलविदा नमस्ते मे माना कि छूटे सस्ते में।
'हे जन्म-जन्म के जवाइयों अब कभी न मिलना रस्ते मे ॥'

• ४ •

इच्छा थी कोका-कोला की पीने को एक दूकान चले।
पर ज्योंही बोतल खुलवाई तो लगा कि ज्यों भूकम्प चले ॥
आगए आठ कड़के फौरन, बोतलें शहीद हुई उन पर।
यो सवा पाच का बिल आया कोका-कोला की गल्ती पर ॥
तुम कभी पान खाना चाहो और ये टिड्डी-दल आजावे।
तो एक रुपैये मे जाकर के एक पान खाया जावे ॥
जब भी ये कड़के आते हैं तो मन में होती है इच्छा।
पूरी हो चुकी नमाज मुसल्ला आप उठावें तो अच्छा ॥

• ५ •

—घर मे कोई बीमार पड़े कड़ड़े यारों पे जायेंगे।
हे घर से बिजली का पंखा माग शान से लायेंगे ॥
ं के मस्ती हो जाये, भीगेंगे यार पसीने में।
ल से बिल्टी छूटेगी जाकर के एक महीने में ॥

इसलिये आरती करता हूं, हे मेरे कड़केश्वर महा
मुझको तो माफी बख्शो अब औरों पर होवो तुष्टमान
पहले तो मैं एक ब्राह्मण हूं फिर और बाल-बच्चों वाल
उस पर महगाई भारी है, कुछ तो सोचो हे गोपाला
दुनिया है बहुत बडी स्वामी, अच्छा हो जगह-जगह विचरें
है जिसे शनि की महादशा उस घर मे पहुंचा शनिश्चरों
अब तो किष्कधा काण्ड करो, वैसे ही जीवन खर्चील
तुम को है भक्त बहुत सारे दिखलाओ नई रामलीला
तुम नही दृष्टिगत हो, ऐसी अभिलाषा रोजाना करते

कड़के वे हैं जो ……………